हम कार्य कहते हैं वह अगले जन्म का कारण बन सकता है। इस प्रकार कारण-कार्य की व्यवस्था से कर्मों की चक्र चलती चली जाती है। क्या हर कर्म तब तक बैठा रहता है जब तक उसका फल नहीं मिल जाता? अगर हमारे जीवन का संचालन जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों के संस्कारों से होता है और उनके साथ माता-पिता के संस्कार भी मिल जाते हैं जिन्हें भोगना पड़ता है, तब एक-एक कर्म का फल भोगने के लिए इस जन्म के थोड़े से कर्म कैसे बस हो सकते हैं।

कर्म जन्य संस्कारों का भुगतान कैसे होता है

कर्म-जन्य संस्कारों का भुगतान समझने के लिए यह समझ लेना होगा कि कर्म किसी रजिस्टर में नहीं लिखे जाते। कर्म तो अपनी निशानी लगाते जाते हैं, लकीर छोड़ते जाते हैं, रेखा खींचते जाते हैं। यह निशानी, यह लकीर, यह रेखा मास्तिष्क पर पड़ती हैं। उदाहरण के लिए, जब हम पुस्तक पढ़ रहे हैं, तब एक-एक अक्षर को याद नहीं कर रहे होते, फिर भी पिछले अनुभवों के कारण दनादन पढ़ते चले जाते हैं। बाजार में चलते समय हम अपने एक मित्र को देखते हैं। उस समय हम यह नहीं कहते कि हमें उसका चेहरा याद हो गया। हम उसे पिछले इकट्ठा हुए संस्कारों के कारण ही एकदम पहचान जाते हैं। एक व्यक्ति को कुछ शब्द याद करने को कहा जाए, अगले दिन सब भूल जाता है, परन्तु दोबारा याद करने को कहा जाए, तो पहले की मिलान में जल्दी याद कर लेता है। जबकी वह सब कुछ भूल गया था, तो भी मस्तिष्क पर जो रेखाएं धुंधली पड़ गई थी, वे चमक उठती हैं, उनके कारण अब वह जल्दी याद कर लेता है। प्रत्येक अनुभव अपने पीछे मस्तिष्क में एक "संस्कार" छोड़ जाता है। ये संस्कार हमारे आगे आने वाले अनुभवों को बदलते रहते हैं। हम जो कर्म करते हैं वह एक-एक व्यक्ति रूप में हमारे भीतर बैठा नहीं रहता, वह हमारे मस्तिष्क पर एक असर छोड़ जाता है, मस्तिष्क पर एक-एक कर्म नहीं लिखा जाता, उन कर्मों के कारण मस्तिष्क की "बटोरने की शक्ति" संस्कारों का रूप धारण करती जाती है। इसी प्रकार के संस्कारों का बनते जाना

कर्मों का लिखा जाना है। जैसे हम भोजन खाते हैं, यह भोजन शरीर में अलग-अलग तत्वों के रूप में बैठा नहीं रहता, यह पचकर शरीर बन जाता है, अच्छे भोजन से स्वस्थ शरीर, बुरे भोजन से अस्वस्थ शरीर। वैसे ही जब हम कर्म करते हैं, तब वे कर्म उनका फल भोगे जाने के समय तक बैठे नहीं रहते, उन कर्मों से तत्काल, उसी समय, उनका फल - "संस्कार" - बन जाते हैं, उनका मस्तिष्क पर छाप बन जाते हैं। जैसे भोजन के फल-स्वरूप शरीर बन जाता है, वैसे कर्म जो मानसिक भोजन हैं, उनके फल-स्वरूप संस्कार बन जाते हैं। शरीर बन जाने के बाद उस भोजन से हमें नहीं उलझना पड़ता जो हमने खाया था, शरीर से उलझना पड़ता है। इसी प्रकार संस्कार बन जाने के बाद उन भिन्न-भिन्न कर्मों से हमें नहीं उलझना पड़ता जो कर्म हमने किए थे, हमें संस्कारों से ही उलझना पड़ता है। ये संस्कार ही कर्मों का लेखा हैं। इन सब कर्मों को एक-एक करके भोगना नहीं पड़ता। ये संस्कार ही कर्मों के भोग हैं, एक-एक कर्म के भोग, क्योंकि कोई भी कर्म संस्कार छोड़े बगैर नहीं रहता। अच्छे कर्मों का या तो तुरन्त अच्छा फल मिल जाता है, या अच्छे कर्मों से मस्तिष्क पर अच्छा संस्कार लिखे जाने से अच्छी रूचि बन गई, अच्छी दिशा की तरफ मनुष्य चल पड़ा। यह शुभ संस्कार, शुभ रूचि ही अच्छे कर्मों का भोग है, फल है, परिणाम है। अब सब कर्मों को अपनी-अपनी बारी तक बैठे रहने की जरूरत नहीं रहती। बुरे कर्मों का भी या तो तुरंत फल मिल जाता है, या उनसे मस्तिष्क पर बुरा संस्कार लिखा गया, बुरी रूचि बन गई, मनुष्य बुरी दिशा की तरफ चल पड़ा। संस्कारों का रूप धारण कर लेने के बाद कर्म की अलग से सत्ता नहीं रहती, इन संस्कारों का बन जाना ही कर्मों का भुगतान है।

आत्मा एक जन्म से दूसरे जन्म में जाता हुआ, या इस जन्म में ही अपना जीवन बिताता हुआ, भिन्न-भिन्न कर्मों की गठड़ी को अपने ऊपर लादे नहीं फिरता। जैसे बीज में वृक्ष समा जाता है, वृक्ष बीज का ही फैलाव है, विस्तार है, वैसे कर्म - अनन्त कर्म - बीज रूप संस्कार में समा जाते हैं, कर्म संस्कार का ही फैलाव है, अनन्त कर्म सिमिटकर संस्कार में आ बैठते हैं। संस्कार इस जन्म या जन्म-जन्मान्तरों में आत्मा के साथ

रहते हैं, उसे छोड़ते नहीं। वे किस प्रकार आत्मा के साथ बने रहते हैं - इसकी हम आगे चर्चा करेंगे। जब संस्कार आत्मा के साथ आ गये, तब इस बात को जानने की जरूरत नहीं रहती कि अमुक कर्म हम ने किया था, उसका क्या हुआ, क्या नहीं हुआ। जिन कर्मों का तत्काल फल मिल गया वह तो मिल गयरा जिनका नहीं मिला वे कर्म मस्तिष्क पर अपना संस्कार छोड़ जाते हैं, वैसे-के-वैसे नहीं बने रहते। संस्कारों का सिद्धान्त ही यह है कि हमें एक-एक कर्म से वास्ता नहीं पड़ता, हमारा वास्ता संस्कारों से, मनुष्य की रूचि से रह जाता है। कर्मों का प्रश्न संस्कारों के बन जाने पर समाप्त हो जाता है, और इसके बाद हमारी असली समस्या भिन्न-भिन्न कर्म नहीं रहते, संस्कार हो जाते हैं। उदाहरण के लिए हम एक कटोरी में केसर डालते हैं। वह कुछ दिन उसमें पड़ा रहता है, बाद को उसे फेंक देते है। केसर के फेंक देने के बाद भी कटोरी में केसर की बास बनी रहती है। यह बास क्यों बनी रहती है जब केसर की एक-एक बाल फेंक दिया गया? यह केसर का संस्कार है। इसी प्रकार हमारे भिन्न-भिन्न कर्म-अच्छे हों, बुरे हों - मस्तिष्क पर अपनी बास छोड़कर चले जाते हैं। कर्मों की यह बास ही संस्कार कहलाते हैं। इसे एक दूसरे उदाहरण से समझें। फर्श पर हमने पानी बहा दिया। पानी एक दिशा में बहकर निकल गया, सूख गया। अब जब हम वहां दोबारा पानी बहाते हैं तब वह उसी दिशा में बहता है। क्यों? इसलिए क्योंकि पहले बहाव ने एक दिशा बना दी थी, एक रास्ता खींच दिया था, अब दूसरे बहाव को वह बना-बनाया रास्ता मिल गया। इसी को संस्कार कहते हैं।

प्रत्येक वस्तु कम-से-कम बाधा - के नियम (लो ओफ लीस्ट रिसिस्टन्स) को चुनती है, इसलिए एक बार कर्म जिस मार्ग पर चल चुका हो, जिसका हलका - सा भी संस्कार पड़ गया हो, अगली बार उस मार्ग से चलना आसान हो जाता है, होते-होते वह रास्ता स्वाभाविक हो जाता है। यह स्वभाव क्या है? स्वभाव हर एक कर्म का योग-फल है। इस योग-फल का क्या नतीजा निकलता है?

- बाकी अगले अंक में -